NITI Aayog

Ministry of Agriculture & Farmers Welfare
Government of India

Food and Agriculture Organization of the United Nations

राष्ट्रीय संवाद

2030 की ओर अग्रसर भारतीय कृषि

किसानों की आय बढ़ाने, पोषण सुरक्षा एवं सतत खाद्य प्रणाली के लिए दिशा एवं उपाय

कृषि में जलवायु संबंधी जोखिम का प्रबंधन

डॉ. प्रमोद अग्रवाल, डॉ. जयश्री रॉय, डॉ. हिमांशु पाठक, डॉ. एस. नरेश कुमार, डॉ. बी. वेंकटेश्वरलू, डॉ. अनुप घोष, डॉ. ड्यूक घोष

जलवायु परिवर्तन तथा जलवायु परिवर्तनीयता में वृद्धि से हमारी खाद्य सुरक्षा के लिए जोखिम बढ़ने का अनुमान है।जलवायु-स्मार्ट कृषि (सीएसए), के तकनीकी, संस्थागत और नीतिगत हस्तक्षेप हमें उत्पादन बढ़ाने में मदद कर सकते हैं और जलवायु परिवर्तन के लिए अनुकूल बन सकते हैंऔर इसके साथ साथ महत्वपूर्ण ग्रीनहाउस गैसों (जीएचजी) के घटाने (मिटिगेशन) से जुड़े सह-लाभ भी दे सकते हैं।पिछले वर्षों में कई नीति और संस्थागत पहलों ने सीएसए कार्य प्रणालियों एवं प्रौद्योगिकियों को अधिक से अधिक अपनाने को बढ़ावा दिया है, जिसने समग्र पैमाने पर वर्षा की कमी के प्रभाव को कम करने में मदद की है। सीएसए कार्य प्रणालियों को अपनाने वाले डोमेन (क्षेत्र) की बेहतर समझ, खाद्य पदार्थ की मांग और आपूर्ति के साथ उनके संबंध और उन्हें बेहतर बनाने के लिए उपयुक्त बिजनेस मॉडल को विकसित करने के लिए निवेश करने की आवश्यकता है। क्लाइमेट-स्मार्ट विलेज एप्रोच इसे प्राप्त करने की एक ऐसी ही रणनीति है। नई डिजिटल और आनुवांशिक तकनीकें, मौसम और उत्पादन जोखिमों की पूर्व चेतावनी प्रणालियों में सुधार, कृषि बीमा कार्यक्रम में पुनः बदलाव, विकल्पी खाद्य पदार्थ तथा संसाधन उपयोग को बढ़ावा देने वाली चक्रीय अर्थव्यवस्था प्रणालियाँ कृषि के लचीलेपन को और सुदृढ़ कर सकती हैं।

पेपर डाउनलोड करने के लिए यहां क्लिक करें।

मुख्य शब्द: जलवायु परिवर्तन, जलवायु-स्मार्ट कृषि, डिजिटल तकनीक, प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली, कृषि बीमा